जैन पर्व
रोट तीज व्रत पूजा विधान
एवं कथा

कृतिकार रू
प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

श्री वीतरागाय नमः

विशद

रोट तीज व्रत पूजा विधान

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 4 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 8 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 12 अर्घ्य
कुल 24 अर्घ्य

कृतिकारः

प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति

आचार्य श्री १०८ विशदसागरजी महाराज

कृति	-	रोट तीज व्रत पूजा विधान
कृतिकार	-	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्त्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	-	प्रथम - 1000
संकलन	-	स्थविर मुनि श्री 108 विशालसागर जी महाराज
सहयोगी	-	मुनिश्री विश्वाक्षरसागरजी, मुनिश्री विभोरसागरजी मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी, मुनिश्री विपिनसागरजी
सहयोगी	-	आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
सम्पादन	-	ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
प्राप्ति स्थल	-	1) श्री सुरेश जैन सेठी, जयपुर, मो.: 9413336017 2) श्री महेन्द्र कुमार जैन, सेक्टर-3, रोहिणी, दिल्ली मो.: 9810570747 3) विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 9416888879
पुण्यार्जक	-	पुण्य कुमार बड़जात्या शोभा बड़जात्या बड़जात्या परिवार, सुदामा नगर, इन्दौर मो.: 6261771269

जैन धर्म में प्रचलित रोटतीज व्रत कथा

दोहा- रोट तीज व्रत है परम, सुख शांती दाता।
'विशद' जीव जो भी करें, पावें सौख्य अपार॥

एक समय विपुलाचल पर श्री वर्धमान स्वामी समवशरण सहित पध ारे। तब राजा श्रेणिक ने नमस्कार करके हाथ जोड़कर प्रार्थना की, कि हे महाराज! रोट तीज व्रत कैसा और इस व्रत से किसको लाभ हुआ और यह व्रत कैसे किस विधि से किया जाता है, सो कृपा करके कहो।

तब वर्धमान स्वामी राजा श्रेणिक से कहते हैं, हे राजन एक समय उज्जैनी नगरी में एक सागरदत्त नाम का सेठ रहता था। उसके छप्पन करोड़ दीनारों की लक्ष्मी देशांतरों में माल भरकर उसके पोत (जहाज) जाते थे। उस सेठ के सात पुत्र थे। एक दिन श्रीमंदिरजी में एक व्रती मुनिराज ने यती और श्रावक के धर्मों का वर्णन किया। श्रावकों ने अपनी शक्ति के अनुसार व्रत लिए। सागरदत्त की सेठानी ने भी प्रार्थना की कि महाराज मुझे भी ऐसा सरल व्रत दीजिए, जो कि एक साल में एक ही वक्त आए और उसमें मैं कुछ खा सकूं। श्री मुनिराज ने फरमाया कि हे! सेठानी व्रत-नियम थोड़े से भी इस पामर जीव को संसार में पार लगा देते हैं।

श्री चौबीसी व्रत जिसे रोट तीज व्रत भी कहते हैं, साल में एक ही वक्त करना होता है। भाद्रपद शुक्ल तृतीया (तीज) को सामायिक स्नान ध्यान करके त्रिकालवर्ती चौबीस तीर्थंकरों की पूजन विधान करना चाहिए।

एक वक्त छहों रस का त्याग करके एकासन और एक ही अन्न से उसी वक्त अन्न और पानी से अंतरायरहित नियमपूर्वक करना चाहिए। इससे लक्ष्मी अटल रहती है। व्रत के दिन कुकथाओं का त्याग करके शील सहित ध र्म-ध्यान में लीन रहना चाहिए। चार प्रकार का दान देना चाहिए।

यह व्रत तीन, बारह व चौबीस वर्ष करना चाहिए। श्रावक के षट् कर्म का (देव पूजा, गुरु सेवा, स्वाध्याय, संयम, तप, दान) पालन करना चाहिए। सेठानी श्री गुरु को नमस्कार करके और व्रत लेकर घर आई। घर आकर सेठानी ने अपने कुटुम्ब परिवार से व्रत लेने के विषय में कहा। कुटुम्ब परिवार ने कहा कि फूलों में रखकर कोमल चावल, घी, शकर, मेवा आदि उत्तम पदार्थों के मिश्रण से जो भोजन किया जाता है, वो हजम नहीं होता है तो ऐसा कठोर व्रत कैसे किया जाएगा।

कुटुम्ब परिवार की निंदा से सेठानी ने लिए हुए व्रतों का त्याग कर दिया। व्रत भंग के पापोदय से सर्वलक्ष्मी नष्ट हो गई, मोतियों का पानी हो गया,

रत्नों व सोने-चांदी के ढेर थे, वे पत्थर-कंकरों के ढेर हो गए, देशांतरों के प्रोहन (जहाज) जहां के तहां रह गए, धन के अभाव में दास-दासियाँ भाग गए तथा दिन बड़े ही कष्ट से व्यतीत होने लगे।

तब सेठ, सेठानी और सातों पुत्र और उनकी स्त्रियाँ इस प्रकार 16 प्राणियों ने देशांतर जाने का विचार किया और उज्जैन नगरी छोड़कर बाहर निकल गए।

हस्तिनापुर में सागरदत्त सेठ की पुत्री परनाई थी। संकट के कुछ दिन काटने की इच्छा से हस्तिनापुर जाकर पुत्री को खबर पहुंचाई कि हमारे ऊपर संकट पड़ गया है, सो तेरे पास मदद के लिए आए हैं, हमारे संकट के कुछ दिन के लिए सहायक होना चाहिए।

पुत्री ने ऐसी बात सुनकर खबर लाने वाले को कहा- मेरे ससुराल वाले यह कहने लग जाएंगे कि हमारा धन चोरी-चोरी कर पीहर पहुंचा देती है अत: मेरे से ऐसा कष्ट सहा नहीं जाएगा इसलिए ये कष्ट के दिन दूसरी जगह जाकर बिताएं और थाली और दाल-भात भोजन की सामग्री, एक वक्त का भोजन और उसमें पांच रत्न छिपाकर भेज दिए।

सेठ के पापोदय और सेठानी के व्रतभंग दोष से वो थाल मिट्टी का बरतन भोजन सामग्री कीड़ों सहित और मोहरों के कोयले बन गए। उसे उसी जगह खड़ा खोदकर उसने गाड़ दिए और बसंतपुर ससुराल थी। वहां कुछ समय कष्ट के दिन काट देने की इच्छा से गए।

उस दिन सागरदत्त सेठ के साले रामजी सेठ के यहां जीमनवार थी। इस जीमनावार की खबर सुनकर उन्होंने विचार किया कि इस वक्त रामजी सेठ के यहाँ जीमने वास्ते बड़े-बड़े लोग आए होंगे, ऐसी गरीबी अवस्था में हमारा वहाँ पहुंचना ठीक नहीं होगा और रात के वक्त अंधेरे में चलेंगे।

कई दिनों की भूख से सभी अधीर हो रहे थे। सागरदत्त सेठ की स्त्री ने कहा कि भूख शांति के लिए मैं जाकर थोड़ा सा चावलों का पानी (मांड) जो मकान के पिछवाड़े से नाले में गिर रहा है, ले आती हूं। एक मटकी हांडी ले जाकर नाले के नीचे रख दी।

मकान के ऊपर रामजी सेठ की स्त्री खड़ी देख रही थी। उसने अपनी ननद को ऐसी गरीब हालत में देखकर विचार किया कि इनका धन नष्ट हो गया है और अब यहां हमको सताने आए हैं, ऐसा विचार करते हुए जिस नाले से चावल का मांड जा रहा था, उस नाले में एक पत्थर सरका दिया।

वो पत्थर पड़ने से नीचे रखी मटकी हांडी फूट गई और चावल का

गरम-गरम मांड सेठानी के पैरों पर गिर गया जिससे वह जल गई और बहुत दुखित हुई। पुत्र, खबर पाकर कपड़े की झोली में डालकर उठा ले गए।

अयोध्या में सागरदत्त सेठ का मित्र रहता था। सेठ अपने कुटुम्ब को दूसरे ठिकाने पर छोड़कर अकेला ही अपने मित्र से मिलने गया। मित्र ने भली-भांति आदर-सम्मान किया और धैर्य देते हुए कहा कि- हे मित्र! संतोष धारण करो। हमारे घर को तुम अपना ही समझकर यहां रहो। तुम कुटुम्ब को दूसरे ठिकाने छोड़कर क्यों आए? क्या इस घर को तुमने दूसरा समझा था?

दोनों के आपस में रात के वक्त महल में दुःख-सुख की बात करते हुए आधी रात्रि व्यतीत हो गई। मित्र तो उठकर दूसरे ठिकाने सोने को चला गया और सागरदत्त सेठ वहाँ ही रहा। उस वक्त वहां खुँटी पर चित्र में मंढी हुआ जो मोर था। उस हार को निगल रहा था और सेठ पड़े-पड़े देख रहे थे। सेठ ने विचार किया कि दिन निकलते ही मुझे यह चोरी का कलंक लगेगा और मैं कैसे सहूंगा? ऐसा विचार कर रात्रि में ही चला गया और अपने कुटुम्ब से जाकर सारी हकीकत कही।

उधर मित्र ने बहुत अफसोस किया कि मैं बहुत सेवा करने वाला था, वह चला क्यों गया? वहां से चलकर उन्होंने चंपापुरी में समुद्रदत्त सेठ के पास पहुंचकर अपने दुःख की सब हकीकत कहीं। सेठ ने हर एक प्राणी को दो सेर खाई के गले हुए जौ और दो पैसे भर कड़वा तेल की मजदूरी में रख लिया।

स्त्रियां घर का काम करती थीं और पुरुष दुकान का काम करते थे। सागरदत्त सेठ ने समुद्रगुप्त की स्त्री को धर्मबहन बना लिया था। कुछ दिन बाद भाद्रपद शुक्ल दूज को समुद्रदत्त की स्त्री ने सबको कहा कि कल हर एक काम सफाई से करना, क्योंकि कल व्रत का दिन है।

सागरदत्त के छोटे बेटे की स्त्री ने पूछा कि कल कौन सा व्रत है और इससे क्या होता है और कैसे किया जाता है? समुद्रदत्त सेठ की स्त्री ने व्रत की उपरोक्त विधि बताते हुए कहा कि इससे लक्ष्मी बढ़ती है।

सागरदत्त की पुत्रवधू ने व्रत पर दृढ़ श्रद्धा करते हुए अपने भाग्य की जौ की रोटी बनाकर सबके साथ गुप्त रीति से ले गई और चढ़ाते हुए प्रार्थना करी कि हे प्रभु! हम तो रत्नों का नैवेद्य चढ़ाने लायक थे, परंतु आज हमारी ऐसी संकटापन्न स्थिति है कि मैं उपवास करके अपने भाग्य को नैवेद्य बनाकर आपको अर्पण कर रही हूँ और करुणाभरी पुकार करी।

व्रत में दृढ़ श्रद्धा की वजह से इतना पुण्य उपार्जन हुआ कि चढ़ाया हुआ

नैवेद्य तुरंत ही सुवर्ण रत्नों का बन गया और पंचों को खबर मिलने से पंच लोग आश्चर्य करने लगे।

उस तरफ समुद्रदत्त सेठ की स्त्री ने एक बड़ा रोट बनवाकर सागरदत्त की स्त्री को देते हुए कहा कि भोजाई, यह रोट आज तुम्हारे बच्चों को दे देना। उसने पूछा कि ननदजी आज यह कौन-सा त्योहार है कि आज उत्सव मनाया जा रहा है। उसने कहा कि आज चौबीसी व्रत अर्थात् रोटतीज व्रत है जो इसे श्रद्धाभक्ति से करता है उस पर कभी संकट नहीं आता है।

सागरदत्त की स्त्री को मुनिराज के दिए हुए व्रत की याद आने और उसे भंग कर देने, छोड़ देने से भारी पश्चाताप हुआ और यह भी जाना कि इस व्रत भंग के दोष से हमारी यह संकटापन्न स्थिति हो गई है। पश्चाताप करते हुए उसने व्रत करने का निश्चय किया।

व्रत पर श्रद्धा होने से और भूल का पश्चाताप होने से पुण्य का उदय हुआ जिसके प्रभाव से हाथ में आया हुआ रोट तुरंत ही सुवर्ण का बन गया। सुवर्ण का रोट देखकर लोभ उत्पन्न होने से समुद्रदत्त सेठ की स्त्री ने कहा कि भोजाई, आटा और सुवर्णों का रोट दोनों पास-पास रखे थे, सो गलती से यह सुवर्ण का रोट आ गया और गेहूं का वहीं रह गया। यह सुवर्ण का रोट मुझे वापस दे दो। गेहूं का रोट मैं तुम्हारे लिए लाती हूं।

यह रोट समुद्रदत्त की स्त्री के हाथ में जाते ही गेहूं का बन गया। तब समुद्रदत्त की स्त्री कहने लगी- भोजाई अब तुम्हारे पुण्य का उदय आ गया है जिससे तुम्हारे हाथ में आते ही सुवर्ण का रोट बन जाता है।

उधर सागरदत्त ने व्यापार-धंधा किया जिससे वे वापस करोड़पति हो गए। वहाँ से रवाना होकर वे मित्र के घर अयोध्या आए। मित्र ने जैसा सम्मान पहले किया था, वैसा ही सम्मान भाव व प्रेमपूर्वक अब भी किया।

सौ सज्जन अरु लाख मित्र, मजलिस मित्र अनेक।
दुख काटन विपदा हरन, सो लाखन में एक॥

लेकिन नौकर लोग कहने लगे कि यह वही सेठ है, जो पहले मोर के गले से हार निकालकर ले गए। उसी द्रव्य से कमाई करके करोड़पति बनकर आए और अब कुछ लेने आए हैं, इनकी चौकसी करना। रात के वक्त वो ही चित्राम का मड़ा हुआ मोर उस हार को वापस उगलने लगा। तब सबको बुलाकर दिखाया कि एक दिन वो था जबकि चित्राम का मोर हार निगल गया था और यह दिन है कि चित्राम का मोर हार उगल रहा है।

वहाँ कुछ दिन रहकर सेठ अपनी ससुराल बसंतपुर आए। रामजी सेठ खबर पाकर लेने को आए। बहन ने कहा कि भाई, तुम हमारे धन को

देखकर लेने आए हो। अगर हमें चाहते तो संकट में पहले मदद करते। उस वक्त भोजाई ने मांड भी नहीं लेने दिया। गरम-गरम चावलों का मांड पत्थर से गिराया जिसमें मेरा अंग जला, जो अभी भी अच्छा नहीं हुआ।

रामजी सेठ ने कहा- बहन, उस वक्त तुम्हारे पापोदय से कुबुद्धि सूझती थी। सेठ समझाकर बहन को अपने घर ले आए।

कुछ दिनों बाद हस्तिनापुर में अपनी पुत्री के यहाँ चले गए। पुत्री खबर पाकर बहुत सी सहेलियों के साथ गाजे-बाजे के साथ अगवानी को आई।

होत की बहन अनहोत का भाई, नैना पीछे नार पराई।

भाइयों ने कहा कि हे बहन! उस दिन को याद कर, जब हम संकटग्रस्त आए थे तो तू एक दिन भी रखने को राजी न थी। न मिलने को ही आई, बल्कि ठीकरे में कीड़े और कोयले ही भरकर भेजे थे जिन्हें हम यहाँ गाड़ गए थे। बहन ने कहा- भैया! मैंने तो भोजन ही भेजा था, तुम्हारे पापोदय से ऐसा बन गया। अगर मैं उस अवस्था में मिलने आती तो मेरी ससुराल और तुम्हारी दोनों की बदनामी होती।

सागरदत्त सेठ ने अपनी पुत्री को धन-जेवर देकर विदा किया। वे वहां से अपने देश उज्जैनी को वापस आ गए। जो लक्ष्मी पहले बिड रूप हो गई थी, वो सब अपनी असली अवस्था में मिली। दास-दासी, नौकर-चाकर सब आ मिले। देशांतरों के प्रोहन (जहाज) जो जहाँ के तहाँ रुक गए थे, वे सब पुण्य के प्रभाव से व्रत की दृढ़ श्रद्धा से आ मिले।

इससे हे जीवों, व्रत भंग को महादोष समझकर हर एक को व्रत दृढ़ श्रद्धा से करना चाहिए और उसकी कथा वांचना, सुनना, अनुमोदन करना चाहिए, चाहे कोई भी व्रत हो, व्रत करने वाले को पूजा, दान, सामायिक जरूर ही करना चाहिए।

परम पूज्य आचार्य श्री विशद सागर जी द्वारा रचित यह पूजा विधान रोट तीज व्रत करने अवश्य करें यदि आप व्रत नहीं करते हैं तो भी रोट तीज के दिन यह पूजा अवश्य करें एवं रोट तीज कथा पढ़ें।

(संकलन- मुनि विशाल सागर)

रोट तीज व्रत पूजन विधान (लघु)

स्थापना

माह भाद्रपद तृतिया तिथि को, रोट तीज व्रत कहे जिनेश।
ऋद्धि सिद्धि समृद्धि प्रदायक, पावन व्रत यह रहा विशेष॥
दमयन्ती सेठानी ने इस, व्रत का पालन किया महान।
जिसके फल से सुख समृद्धी, पाया है जग में सम्मान॥
दोहा- तीर्थंकर चौबीस का, तीन काल गुणगान।
भाव सहित अर्चा करें, करके शुभ आह्वान॥

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितों भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू-छन्द)

जलते हम जीवन उपवन को, वाणी जल से सजल करें।
मोह क्षोभ मय निज भावों को, श्रद्धा जल से धवल करें॥
भक्ति भाव का जल सिंचन कर, सादर शीश झुकाएँगे।
रोट तीज व्रत की पूजा कर, जिन महिमा प्रगटाएँगे॥1॥

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।

समता जल की शुभ्र घटाएँ, तृष्णा आंधी से उड़तीं।
नर जीवन की पावन घड़ियाँ, क्षण-क्षण कर सारी घटतीं॥
समता गुण का चंदन अर्पित, कर शीतलता पाएँगे।
रोट तीज व्रत की पूजा कर, जिन महिमा प्रगटाएँगे॥2॥

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

लीन हुए पर पद में अब तक, निज पद का ना भान किया।
तन परिजन धन पर हैं सारे, तव दर्शन कर ज्ञान किया॥
अक्षत पुंज चढ़ाकर तव पद, निज निधि को प्रगटाएँगे।
रोट तीज व्रत की पूजा कर, जिन महिमा प्रगटाएँगे॥3॥

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतंनिर्व. स्वाहा।

जिन शासन के उपवन में जो, खिले सुमन का साज किया।
मधु पराग पाने को तुमने, जिन मुद्रा का ताज लिया॥
जिनवाणी के पुष्पों का रस, मधुकर बन कर पाएँगे।
रोट तीज व्रत की पूजा कर, जिन महिमा प्रगटाएँगे॥4॥

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

क्षुधा व्याधि से पीड़ित होकर, शमन हेतु कई यत्न किए।
काल अनादी विषम रोग ने, भव में कई –कई कष्ट दिए।।
सद्गुण के नैवेद्य चढ़ाकर, व्याधी शीघ्र नशाएँगे।।
रोट तीज व्रत की पूजा कर, जिन महिमा प्रगटाएँगे।।5।।

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर
जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

आलोकित कर जग जीवन यह, जगमग दीपक जले महान।
ज्ञान दीप प्रगटाने हेतू, प्रेरित करता आभावान।।
अनन्त चतुष्टय को पाकर के, ज्ञान की ज्योति जलाएँगे।
रोट तीज व्रत की पूजा कर, जिन महिमा प्रगटाएँगे।।6।।

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर
जिनेन्द्राय महामोहान्धाकारविनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

सम्यक् तप की अग्नि जलाकर, करना सारे कर्म दहन।
काल अनादी से जो पाई, निज चेतन में लगी तपन।।
दश धर्मों की धूप दशांगी, खेकर गंध उड़ाएँगे।
रोट तीज व्रत की पूजा कर, जिन महिमा प्रगटाएँगे।।7।।

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर
जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

वीतराग अविकारी मुद्रा, में खिलतीं कलियाँ पावन।
रत्नत्रय गुण के फल फलते, सरस मधुर अति मन भावन।।
सद्गुण के फल पाने को फल, पावन यहाँ चढ़ाएँगे।
रोट तीज व्रत की पूजा कर, जिन महिमा प्रगटाएँगे।।8।।

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस तीर्थंकर
जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तायफलं निर्व.स्वाहा।

थाल सजाया अरमानों का, नयन कटोरी जल लाए।
निर्मल भावों की केसर ले, तन्दुल सद् गुण के पाए।।
चेतन गुण के पुष्प रंगाए, तन नैवेद्य बनाया है।
धूप बनाई अष्ट कर्म की, श्री फल शीश सजाया है।।
आठ अंग का अर्घ्य विशद शुभ, करके यहाँ चढ़ाएँगे।
रोट तीज व्रत की पूजा कर, जिन महिमा प्रगटाएँगे।।9।।

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक चौबीस
तीर्थंकर जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा– शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
आशा ले पूजा करी, पाएँ भव से पार।।
।। शांतये शांतिधारा।।

दोहा- पुष्प बनाए जो यहाँ, उससे ही हे नाथ!।।
पुष्पांजलि करते विशद, झुका चरण में माथ।
।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

जम्बूद्वीप भरत क्षेत्रस्य त्रिकाल वर्ती चौबीस तीर्थंकरों के अर्घ्य

चौपाई

'श्री निर्वाण' प्रथम जिनराज, 'ऋषभ नाथ' पद पूजें आज।
'महापद्म' भावी तीर्थेश,जिन पद पूजें भक्त विशेष।।1।।
ॐ ह्रीं श्री निर्वाण-ऋषभ-महापद्म
त्रिकालवर्ती चौबीस तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'सागर' जिनवर 'अजित' जिनेश, श्री 'सुरदेव' कहे तीर्थेश।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।2।।
ॐ ह्रीं श्री सागर-अजित-सुरदेव
त्रिकालवर्ती चौबीस तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'महासाधु' 'सम्भव' जिनराज, 'श्री सुपार्श्व' पद पूजें आज।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।3।।
ॐ ह्रीं श्री महासाधु-सम्भव-सुपार्श्व
त्रिकालवर्ती चौबीस तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'श्री विमलप्रभ' हुए महान,चौथे 'अभिनन्दन' भगवान।
श्री 'स्वयंप्रभ' जी तीर्थेश, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।4।।
ॐ ह्रीं श्री विमलप्रभ-अभिनन्दन-स्वयंप्रभ
त्रिकालवर्ती चौबीस तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'श्री धर' जिनवर 'सुमति' प्रधान, 'श्री सर्वात्म' भूत गुणवान।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।5।।
ॐ ह्रीं श्री श्रीधर-सुमति-श्रीसर्वात्म
त्रिकालवर्ती चौबीस तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'श्री सुदत्त' पदम प्रभु जान, 'देवपुत्र' छठवे भगवान ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।6।।
ॐ ह्रीं श्री श्रीसुदत्त- पद्मप्रभु-देवपुत्र त्रिकालवर्ती चौबीस
तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'श्री अमलप्रभ' प्रभू 'सुपार्श्व', जिन 'कुलपुत्र' हैं मानो पार्श्व।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।7।।
ॐ ह्रीं श्री अमलप्रभ-सुपार्श्व-कुलपुत्र त्रिकालवर्ती चौबीस
तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

' उद्धर जी ' श्री चन्द जिनेश, 'श्री उदंक' अष्टम तीर्थेश ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।8।।
ॐ ह्रीं श्री उद्धर, श्रीचन्द, श्रीउदंक त्रिकालवर्ती चौबीस
तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'अंगिर जी 'श्री 'सुविधि'जिनेश, 'प्रौष्ठिल'जी भावी तीर्थेश।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।9।।
ॐ ह्रीं श्री अंगिर-सुविधि-प्रौष्ठिल त्रिकालवर्ती चौबीस
तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'श्री सन्मति 'जिन 'शीतल नाथ', 'जय कीर्ति 'जिन हैं नरनाथ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।10।।
ॐ ह्रीं श्री सन्मति-शीतलनाथ-जयकीर्ति त्रिकालवर्ती चौबीस
तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'श्री सिन्धू' जिन 'श्रेय' जिनेश, 'मुनिसुव्रत' हैं पूज्य विशेष।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।11।।
ॐ ह्रीं श्री श्री सिन्धु-श्रेय-मुनिसुव्रत त्रिकालवर्ती चौबीस
तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाह।

'कुसमाजंलि 'हैं कुसुम समान, 'वासुपूज्य ' 'अर 'पूज्य महान।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।12।।
ॐ ह्रीं श्री कुसमांजलि-वासुपूज्य-अर त्रिकालवर्ती चौबीस
तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'शिवगण' ' विमलनाथ' भगवान, श्री 'निष्पाप' हैं गुण की खान।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।13।।
ॐ ह्रीं श्री शिवगण-विमलनाथ-निष्पाप त्रिकालवर्ती चौबीस
तीर्थंकरेभ्यो अघ्य निर्व.स्वाहा।

'श्री उत्साह ' 'अनन्त' जिनेश,' निष्कषाय' भावी तीर्थेश।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।14।।
ॐ ह्रीं श्री श्री उत्साह-अनन्त-निष्कषाय त्रिकालवर्ती चौबीस
तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'ज्ञानेश्वर 'श्री 'धर्म जिनेश', 'विपुल' जिनेश्वर पूज्य विशेष।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।15।।
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानेश्वर-श्री धर्म-विपुल त्रिकालवर्ती चौबीस
तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'परमेश्वर' श्री 'शांति जिनेन्द्र, 'निर्मल' जिन पूजें शत इन्द्र।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष॥16॥

ॐ ह्रीं श्री परमेश्वर-श्री शांति-निर्मल त्रिकालवर्ती चौबीस तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'विमलेश्वर' जिन 'कुन्थू नाथ', 'चित्रगुप्त' जिन हुए सनाथ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष॥17॥

ॐ ह्रीं श्री विमलेश्वर-कून्थू-चित्रगुप्त त्रिकालवर्ती चौबीस तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रभू 'यशोधर' 'अरह' जिनेश, 'समाधिगुप्त' भावी तीर्थेश।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष॥18॥

ॐ ह्रीं श्री यशोधर-अरह-समाधिगुप्त त्रिकालवर्ती चौबीस तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'कृष्णमति' जिन 'मल्ली नाथ', झुके 'स्वयंभू' जिनपद माथ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष॥19॥

ॐ ह्रीं श्री कृष्णमति-मल्ली-स्वयंभू त्रिकालवर्ती चौबीस तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'ज्ञानमति ' 'मुनिसुव्रत' नाथ, 'अनिवर्तक' तीर्थंकर साथ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष॥20॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमति-मुनिसुव्रत-अनिवर्तक त्रिकालवर्ती चौबीस तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'श्री शुमति' जिनवर 'नमिनाथ', 'श्री जय' पद में जोड़ें हाथ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष॥21॥

ॐ ह्रीं श्री शुमति-नमिनाथ-श्रीजय त्रिकालवर्ती चौबीस तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जिन 'श्री भद्र' 'नेमि' तीर्थेश, 'विमल' जिनेश्वर पूज्य विशेष।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष॥ 22॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीभद्र-नेमि-विमल त्रिकालवर्ती चौबीस तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'अतिक्रान्त' जिन 'पार्श्व' महान, 'देवपाल' भावी भगवान।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष॥23॥

ॐ ह्रीं श्री अतिक्रान्त-पार्श्व-देवपाल त्रिकालवर्ती चौबीस तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'शांतिनाथ' 'श्री वीर' जिनेश ,'अनन्तवीर्य' भावी तीर्थेश।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष॥24॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-श्रीवीर-अनन्तवीर्य त्रिकालवर्ती चौबीस तीर्थंकरेभ्यों अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- चौबिस जिनवर भूत के, वर्तमान भगवान।
भावी चौबिस होयेंगे, करते हम गुणगान॥25॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल संबंधी चतुर्विंशति त्रिकालवर्ती चौबीस तीर्थंकरेभ्यों अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा-महिमा जिसकी है अगम, गरिमा रही विशाल।
रोट तीज व्रत की विशद, गाते हैं जयमाल॥

(ज्ञानोदय-छन्द)

वीर प्रभू के समवशरण में, प्रश्न किये गौतम गणराज।
रोट तीज का व्रत कैसे हो, जिसकी विधि प्रभु कहिए आज॥
उज्जैनी नगरी के श्रेष्ठी, सागर दत्त की भार्या जान।
दमयन्ती ने मुनि से व्रत की, इच्छा मन की रखी प्रधान॥1॥

भादों सुदि तृतिया को यह, व्रत एक साल में हो इक बार।
सब रस त्याग एकाशन करके, सामायिक जप कर व्रत धार॥
चौबीसों जिनवर की पूजा, गुरु से व्रत लें भली प्रकार।
घर आते उपहास किया तब, सेठानी का निज परिवार॥2॥

छप्पन कोटि दीनार का स्वामी, व्रत निन्दा का करके पाप।
हुए दरिद्री सेठ सेठानी, कहें चलो देशान्तर आप॥
सातों सुत भार्याएँ संग ले, हस्तिनापुर पुत्री के पास।
निन्दा के भय से मुख मोड़ा, पुत्री ने तोड़ा विश्वास॥3॥

नगर वसन्तपुर सेठ राम जी, के घर थी जिसकी ससुराल।
किए किनारा परिजन सारे, जान के उनका ऐसा हाल॥
माँड़ लेन दमयन्ती पहुँची, हांडी मोरी के रख पास।
पत्थर भावज ने सरकाया, हांडी फूट जली तव सास॥4॥

बेटे बहुएँ लेकर आए, अशुभ कर्म फल मान प्रधान।
नगर अयोध्या सागर दत्त के , मित्र के गृह पहुँचे सब जान॥
रात में खूटी निगल रही थी, स्वर्णमयी रानी का हार।
चोर कहाएँगे यह बोले, सेठ चलो सब सह परिवार॥5॥

चम्पापुर में समुद्रदत्त के, गृह चाकर बन पाले पेट।
दो सेर जौ दो टका तेल तब, मजदूरी देता था सेठ॥
भादव सुदी दोज सेठानी, बोली कल का रखना ध्यान।

रोट तीज व्रत का सेठानी, ने बतलाया सब व्याख्यान॥6॥
छोटी बहू ने अपने हिस्से, की रोटी ले जा जिन धाम।
व्रत पालन कर प्रभु पद विनती, करके जिन पद किया प्रणाम॥
पुण्योदय जागा व्रत करके, पाए सब व्यापार महान।
बनकर सेठ पुनः घर आए, पाए फिर जग में सम्मान॥7॥
दोहा- व्रत का पालन कर सभी, पाए सौख्य अपार।
निरतिचार व्रत पाल कर, करो स्वयं उद्धार॥

ॐ ह्रीं रोट तीज व्रताराध्य श्री त्रैकालिक
चौबीस तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा-जिन भक्ती व्रत धारकर, हों प्राणी खुशहाल।
'विशद' भाव से व्रत अतः, कीजे सभी त्रिकाल॥

॥ इत्याशीर्वाद:पुष्पांजलि क्षिपेत॥

आचार्य श्री का अर्घ

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ हूं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरती श्री रोट तीज व्रत की

तर्ज- आज करें हम....

रोट तीज व्रत की करते हम, आरति मंगलकारी।
सुख शांती सौभाग्य जगाएँ, श्री जिन के दरबार॥
हो जिनवर हम सब उतारें मंगल आरती॥1॥
दमयन्ती रानी राजा नल, की अतिशय कहलाई।
मुनिवर से व्रत लेकर के जो, उसे निभा ना पाई॥2॥ हो....
जिसके फल से उसके घर में, बहु दरिद्रता आई।
दर-दर फिरे भटकते सारे, घर के प्राणी भाई॥3॥ हो....
चम्पापुर नगरी में जाके, किए नौकरी सारे।
समुद्र दत्त जी सेठ के गृह पे, पाए आप सहारे॥4॥ हो....
रोट तीज व्रत पुत्र वधू कर, गलती पर पछताई।
पुनः पुण्य जागा फिर उसका, होने लगी कमाई॥5॥ हो....
पाकर धन सामग्री सारे, वापिस नगर में आए।
स्वजन और परिजन सब मिलकर, अतिशय हर्ष जगाए॥6॥ हो....
रोट तीज व्रत करके हम भी, जिनवर के गुण गाएँ।
जिन अर्चा हम करें भाव से, ''विशद'' "शांति सुख पाएँ॥7॥ हो....

आलोचना पाठ (लघु)

दोहा- चौबीसों जिन पद नमूँ, नव देवों के साथ।
करते हैं आलोचना, क्षमा करो हे नाथ!॥

(विष्णुपद छन्द)

जाने या अन्जाने हमसे, दोष हुए स्वामी।
निवृत्ती उनसे हो जाए, हे अन्तर्यामी!॥
संम्रम्भादिक योग कषाएँ, कृत आदिक जानो।
एक सौ आठ भेद से प्राणी, घात किया मानो॥1॥

मिथ्यामति हो षट् अनायतन मूढ़ हुए भाई।
पाँच पाप पंचेन्द्रिय में भी, प्रवृत्ती पाई॥
मद्य माँस मधु पंच उदुम्बर, सप्त व्यसन गाए।
बाइस अभक्ष्य कहे शास्त्रें में, वे सारे खाए॥2॥

सोलह भेद कषायों के अरु, नौ कषाय गाई।
दोष स्वप्न में हुए अनेकों, जाने ना भाई॥
असन वसन या गमन क्रिया में, यत्न नही कीन्हा।
मर्यादा जो ली जिन चरणों, नहीं ध्यान दीन्हा॥3॥

अहोरात्रि में क्रिया दुष्टता, पूर्ण किए स्वामी।
त्रस जीवों का घात हुआ जो, जानो शिवगामी॥
भू- जल - अग्नी - वायु - वनस्पति, स्थावर गाये।
इन जीवों का घात किया जो, जान नहीं पाए॥4॥

द्वय तिय चउ चक्री वाहन से, कुचले जो प्राणी।
पंखा कूलर हीटर द्वारा, हुई जीव हानी॥
झाडू पोंछा आदि क्रिया में, किए दोष भारी।
तीखे साबुन का जल ढोल्या, हो प्रमाद कारी॥5॥

कृषि व्यापार नौकरी में भी, तृष्णा भाव जगे।
राग-द्वेष आरम्भादिक से, अगणित दोष लगे॥
कर्मोदय से पूर्व भवों के, प्राणी फल पावें।
आज किए जो कर्म शुभाशुभ, साथ 'विशद' जावें॥6॥

दोहा- दोष हमारे दूर अब, कर दो हे भगवान।
भक्ती से मुक्ती मिले, पाएँ यह वरदान॥
करते हम आलोचना, रहें कोई ना दोष।
'विशद' भावना है यही, जीवन हो निर्दोष॥

बारह भावना

दोहा- भाए बारह भावना, मन में श्रद्धा धार।
'विशद' व्रतों को प्राप्त कर, हो जाए भव पार॥

(सखी छंद) (तर्ज-आलोचना पाठ)

धन वैभव जग के सारे, हैं झूठे स्वप्न हमारे।
तन जीवन अस्थिर गाए, क्षण-क्षण में जो मुरझाए॥1॥
सुर-असुर नराधिप जानो, ना शरण कोई है मानो।
मणि मंत्र तंत्र जो गाए, ना मरते कोई बचाए॥2॥
संसार महा दुखदायी, है सुखाभास मय भाई।
इसमें जग जीव भ्रमाते, जो जन्म मरण दुख पाते॥3॥
यह जन्म जीव इक पावे, संसार में एक भ्रमावे।
इक जीव मरण कर जावे, एकत्व भावना भावे॥4॥
तन चेतन भिन्न बताये, जो क्षीर नीर सम गाये।
फिर गृह, धन, परिजन, दारा, क्या देंगे साथ हमारा॥5॥
तन का श्रृंगार कराया, यह जीवन व्यर्थ गँवाया।
अत्यन्त अशुचि जड़ काया, चैतन्य जीव यह गाया॥6॥
जब योग चपल हो जावें, तो प्राणी आस्रव पावें।
आश्रव गाया दुखदायी, भव भ्रमण कराए भाई॥7॥
जो पुण्य पाप परिहारी, आतम अनुभव चित् धारी।
आस्रव रोकें वे प्राणी, संवर करते मुनि ज्ञानी॥8॥
हो कर्म निर्जरा भाई, सम्यक् तप से शिवदायी।
फिर आत्म शुद्ध हो जावे, जो शिवपुर में पहुँचावे॥9॥
कर कटि पर पग फैलाए, मानव सम लोक दिखाए।
चौदह राजू ऊँचाई, में भ्रमण जीव का भाई॥10॥
धन कंचन वैभव पाना, सब सुलभ लोक में माना।
पर ज्ञान यथारथ जानो, दुर्लभ जग में है मानो॥11॥
रत्नत्रय धर्म बताया, वस्तू स्वभाव शुभ गाया।
दश धर्म क्षमादिक भाई, है 'विशद' मोक्ष पददायी॥12॥

दोहा- अनुप्रेक्षा चिन्तन किए, मन में जगे 'विराग'।
'विशद' भावना है यही, बुझे राग की राग॥

प. पू. आचार्य श्री 108
विमल सागर जी महाराज

प. पू. आचार्य श्री 108
भरत सागर जी महाराज

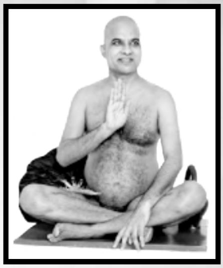

प. पू. आचार्य श्री 108
विराग सागर जी महाराज

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज

पूर्व नाम – रमेश चन्द्र जैन

(पिता – स्व. श्री नाथूराम जैन, माता – श्रीमती इन्दर देवी जैन)

जन्म	:	चैत्र कृष्ण चतुर्दशी, 11 अप्रैल 1964, कुपी–छतरपुर
ब्रह्मचर्य	:	8 नवम्बर 1992, द्रोणगिरी (छतरपुर)
ऐलक दीक्षा	:	मार्गशीष शुक्ल पंचमी, 18 दिसम्बर 1993, श्रेयांसगिरी (पन्ना)
मुनि दीक्षा	:	फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी , 8 फरवरी 1996, द्रोणगिरी, (छतरपुर)
आचार्य पद	:	बसंत पंचमी, 13 फरवरी 2025, मालपुर (जयपुर)

Website : www.vishadsagar.com